# उपसंहार

## उपसंहार —

### * मोहन राकेश का जीवन परिचय *

इस अध्याय का विवेचन करने के उपरान्त मैं जिस निष्कर्ष तक पहुच चुका हूँ वे इस तरह हैं — मोहन राकेश का बचपन पराधीन भारत में बीता है। उनका जन्म ८ जनवरी १९२५ को अमृतसर में हुआ। उनका वास्तविक नाम मदन मोहन गोगलानी था, किन्तु इन्होंने मदन तथा गोगलानी शब्दों को निकालकर मोहन नाम को ही पसंद किया और अपने लिए उसके आगे राकेश जोड दिया। इस तरह आज वे हिन्दी साहित्य में मोहन राकेश के नाम से जाने जाते हैं। उनका जन्म जिस परिवार में हुआ था वह मध्यवर्गीय परिवार था। उनके पिता पेशे से वकील थे और घर की आर्थिक स्थिति संतोषजनक नहीं थी। यह परिवार अमृतसर में किराये के मकान में रहता था। उनका बचपन जिस घर में बीता वह सिलन से भरा हुआ तथा बदबुदार नालियों से घिरा हुआ था। इसी से उनकी गिरी हुई आर्थिक स्थिति का पता चलता है। उनकी शिक्षा अमृतसर तथा लाहोर में हुई। आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण छात्रवस्था में वे ट्यूशन करके अपनी पढाई का खर्च पाते थे। पढाई पूरी करने के उपरान्त उन्होंने अनेक नौकरियाँ पाई किन्तु वे ज्यादा देर तक कहीं नहीं टिके। जहाँ स्वाभिमान को धक्का पहुँचता वहाँ वे कभी न रुकते। राकेश को जीवन में तीन विवाह करने पडे, जिसमें पहलेवाले दो विवाह उनके मनोनुकूल नहीं थे। तीसरा विवाह उन्होंने अनीता से किया और इसी विवाह से वे पूरी तरह संतुष्ट थे।

राकेश एक स्वाभिमानी, संवेदनशिल, मिलनसार, जिंदा दिली तथा ईमानदार व्यक्ति थे। अपने अनुभवों को उन्होंने ईमानदारी से चित्रित किया है।

## ' मोहन राकेश के उपन्यासों का रचना परिवेश '

इस अध्याय में मोहन राकेश के उपन्यासों के रचना परिवेश का विवेचन किया गया है। इस अध्याय का विवेचन करने के उपरान्त मैंने जो निष्कर्ष पाये हैं वे इस प्रकार हैं -- मोहन राकेश के काल में देश की स्वाधीनता के लिए राजनैतिक संघर्ष अपनी चरम सीमा पर था। भारत छोड़ो आन्दोलन, स्वतंत्रता की प्राप्ति और देश-विभाजन का संकट - इन सभी घटनाओं ने साहित्य में नई चेतना के आयाम अन्वेषित किये और नवीन विचारिकता को जन्म दिया। इन सभी घटनाओं और गति विधियों का दबाव भारतीय जनमानस अनुभव कर रहा था। देश की राजनीतिक ही नहीं बल्कि सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियाँ भी बदल गई थी। ऐसे समय में हिन्दी साहित्याकाश में मोहन राकेश जगमगाते ' तारे ' के रूप में उदित हुए। उन्होंने अपने उपन्यासों में बदलती परिस्थितियों को सच्चाई के साथ अंकित किया है। ' अँधेरे बंद कमरे ' में राकेश ने स्वातंत्र्योत्तर कालीन बदली हुई परिस्थितियों के परिवेश में टूटते दाम्पत्य जीवन, नारी की स्वच्छन्दता, वर्तमान कालीन पत्रकारिता, राजनेताओं तथा अफसरों की चाले, तथा महानगर की दमघोंटू जिंदगी आदि के रूप में सम्पूर्ण समाज को ही चित्रित किया है। राकेश का यह उपन्यास अपने काल के परिवेश का दर्पण है।

' न आनेवाला कल ' में राकेश ने वर्तमानकालीन शिक्षा व्यवस्था तथा दाम्पत्य जीवन की असंगतियों को चित्रित किया है। इस उपन्यास के नायक मनोज उसकी पत्नी शोभा, बौनी, कोहली तथा उसकी पत्नी शारदा, मिस्टर व्हीसलर आदि पात्र वर्तमान कालीन समाज में उभरे हुए चरित्रों के ही प्रतिनिधि हैं।

' अंतराल ' उपन्यास में राकेश ने नायक कुमार तथा नायिका श्यामा के माध्यम से वर्तमानकालीन स्त्री-पुरुष के बीच परिस्थितियों के कारण किस तरह अंतराल बना रहता है इसको प्रकट किया है।

इस तरह निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि युगीन परिवेश का राकेश के उपन्यासों पर गहरा प्रभाव है। उनका उपन्यास साहित्य अपने काल की परिस्थितियों का जीवंत दस्तावेज है।

## ' मोहन राकेश के उपन्यासों का संक्षेप में परिचय '

इस अध्ययन का विवेचन करने के उपरांन्त मैं जिस निष्कर्ष तक पहुँच चुका हूँ वे इस तरह हैं -- राकेश का ' अँधेरे बंद कमरे' उपन्यास औपन्यासिक शिल्प में बंधी हुई एक जीती जागती तसवीर है। राकेश स्वयं कहते हैं कि इसे क्या कहूँ दिल्ली का रेखाचित्र अथवा पत्रकार मधुसूदन की आत्मकथा अथवा हरबंस और नीलिमा के अन्तर्द्वन्द्व की कहानी।' इस उपन्यास में लेखक ने दिल्ली के वातावरण के चित्रण के माध्यमसे आज के नगर तथा समाज की स्थितियों का परिचय कराया है। आजादी के बाद भारत के फैलते महानगर, जहाँ एक ओर ऊँची ऊँची इमारतें हैं, एक सम्पन्न समाज है, नेता और अधिकारी है, वहीं दूसरी ओर गरीब सामान्यजन हैं। इन दोनों के बीच मध्यवर्ग का जीवन है जो संत्रास और घुटन में जीता है, उसे राहत नहीं मिल पाती। इस दृष्टि से ' अँधेरे बंद कमरे' एक प्रासंगिक कथा है। आधुनिक जीवन की असंगतियों और जटिलताओं को प्रस्तुत करनेवाला यह उपन्यास सभ्य की सही देन है। इसमें एक कमरा है जहाँ सूर्य की किरणें नहीं पहुँच पाती और जहाँ मानवीय सम्बन्ध अजीब प्रकार के हैं।

' न आनेवाला कल' राकेश जी का दूसरा उपन्यास है। इस उपन्यास में वर्तमानकालीन शिक्षा व्यवस्था तथा स्कूल का दमघोंटू वातावरण आदि पर तीखा व्यंग्य किया गया है। यह उपन्यास स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को लेकर चलता है। इस उपन्यास का नायक मनोज सक्सेना है, जो शिमला कान्वेण्ट स्कूल में अध्यापक है और वह एक दिन त्यागपत्र दे देता है। स्कूल के दमघोंटू वातावरण में स्वाभीमानी मनोज रह नहीं सकता। उसकी पत्नी शोभा

आधुनिक नारी का प्रतिनिधि पात्र है। श्यामा ने अपने प्रथम पति के साथ सात वर्ष बीताये थे और उसकी मृत्यु के पश्चात मनोज से दूसरा ब्याह किया था। श्यामा वर्तमानकालीन आधुनिक नारी का प्रतिनिधिक पात्र है। किन्तु आधुनिकता के नाम पर ऐसी नारियाँ अपने बरबादी का कारण स्वयं बन जाती हैं। मनोज को अपने मनोनुकूल न पाकर वह उसका त्याग करके फिर अपने पिता के घर लौट जाती है। इस उपन्यास में लेखक ने दु:सम्य दाम्पत्य जीवन के कारणों को स्पष्ट किया है।

`अंतराल` में राकेश ने नायक कुमार तथा नायिका श्यामा के माध्यम से वर्तमानकालीन स्त्री-पुरुष के बीच परिस्थितियों के प्रभाव स्वरुप किस तरह `अंतराल` बना रहता है, इसको प्रकट किया है। इस उपन्यास की नायिका श्यामा विधवा है। शादी के केवल डेढ साल बाद ही उसे विधवा होना पडा था। वह नौकरी भी करती है। वह सास, नन्द, और बच्ची का पेट भी पालती है। वह परिश्रमी नारी है। एम.ए.करके लेक्चरर बनना उसका सपना है। इसी सिलसिले में वह कुमार के सम्पर्क में आती है, उनके मार्गदर्शन में अध्ययन शुरु करती है और अंतर मन से उनके करीब जाती है। कुमार और श्यामा एक-दूसरे को अंतर मन से चाहने लगते हैं। परंतु जटिल परिस्थितियों के फल: स्वरुप दोनों हमेशा हमेशा के लिए एक-दूसरे के नहीं हो सकते और दोनों के बीच का `अंतराल` मिट नहीं जाता। इस उपन्यास में बम्बई जैसे महानगर का चित्रण भी राकेश ने पर्याप्त मात्रा में किया है।

`मोहन राकेश के उपन्यासों में चित्रित समस्याओंका अनुशीलन`

इस अध्याय के विवेचन के उपरान्त मेरे हाथ जो निष्कर्ष लगे वे इस तरह हैं मोहन राकेश ने अपने उपन्यासों में विभिन्न समस्याओं का चित्रण किया है। ये समस्याएँ प्रमुख रुप से इस तरह हैं --

१) असफल दाम्पत्य जीवन की समस्या ।

२) मकान - समस्या ।

३) नौकरी की समस्या ।

४) महानगर की समस्या ।

५) अर्थ-समस्या ।

६) विवाह-समस्या ।

७) प्रेम-समस्या ।

८) यौन की समस्या ।

९) विधवा समस्या ।

उपर्युक्त सभी समस्याओं में से मोहन राकेश की दृष्टि असफल दाम्पत्य जीवन की समस्या पर अधिक केन्द्रित रही है । यह समस्या मोहन राकेश के सभी उपन्यासों में प्रमुख रुप से चित्रित दिखाई देती है ।

अन्तत: मेरा यह निष्कर्ष है कि मोहन राकेश ने वर्तमानकालीन समस्याओं को अपने उपन्यासों में यथार्थ रुप से चित्रित किया है । ये समस्याएँ काल के अनुरुप उभरी हुई हैं । अत: इन समस्याओं का समाधान दिखाई नहीं देता। अंतत: मैं कहूँगा कि मोहन राकेश समस्यामूलक उपन्यासकार हैं ।

१) आधार ग्रन्थ सूची

२) संदर्भ ग्रन्थ सूची

## आधार ग्रन्थ सूची

१) " अँधेरे बंद कमरे" - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण - १९७२।

२) " अंतराल - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, द्वितीय संस्करण -१९७३।

३) " न आनेवाला कल" राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, द्वितीय संस्करण-१९८७।

# संदर्भ ग्रंथ सूची


| क्र. | लेखक एवं ग्रंथ | प्रकाशन | प्रयुक्त संस्करण |
|---|---|---|---|
| १ | अग्रवाल डॉ. सुषमा : `मोहन राकेश : व्यक्तित्व एवं कृतित्व` | पंचशील प्रकाशन जयपूर | प्रथम संस्करण १९८६ |
| २ | अस्थाना डॉ.ज्ञान : `हिन्दी कथा साहित्य: समकालीन संदर्भ` | जवाहर प्रकाशन, मथुरा | प्रथम संस्करण १९८१ |
| ३ | गुप्त डॉ.बालकृष्ण `हिन्दी उपन्यास : सामाजिक संदर्भ` | अभिलाषा प्रकाशन कानपुर | प्रथम संस्करण १९७८ |
| ४ | चव्हाण डॉ.अर्जुण : `राजेंद्र यादव के उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन : एक अनुशीलन` | शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर,की पीएच.डी. उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबंध | १९९० |
| ५ | जाधव डॉ.रमेशकुमार : `मोहन राकेश : व्यक्तित्व एवं कृतित्व` | गीता प्रकाशन इलाहाबाद | प्रथम संस्करण १९८९ |
| ६ | `पण्डिता विमला कुमारी : उपन्यासकार मोहन राकेश : अन्तराल के विशेष संदर्भ में` | पंचशील प्रकाशन जयपुर | प्रथम संस्करण १९७८ |
| ७ | `पिंपळापुरे डॉ.मीना : मोहन राकेश का नारी संसार` | प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली | प्रथम संस्करण १९८७ |

| क्र. | लेखक एवं ग्रंथ | प्रकाशन | प्रयुक्त संस्करण |
|---|---|---|---|
| ८ | बागडी डॉ.आशा : प्रेमचंद परवर्ती उपन्यास साहित्य में पारिवारिक जीवन | शोध प्रबन्ध प्रकाशन दिल्ली | प्रथम संस्करण १९७४ |
| ९ | भटनागर डॉ.महेन्द्र ' समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचंद | ज्ञान भारती प्रकाशन, दिल्ली | प्रथम संस्करण १९८२ |
| १० | राकेश अनीता : ' चंद सतरें और ' | राधाकृष्ण प्रकाशन दरियागंज, दिल्ली | प्रथम संस्करण १९७५ |
| ११ | शर्मा डॉ.धनानन्द ' जदली ' ' मोहन राकेश : व्यक्तित्व एवं कृतित्व ' | शान्ति प्रकाशन रोहतक | प्रथम संस्करण १९९० । |

---

पत्रिका

१) सारिका — मार्च — १९७३ ।